पुरूष, स्त्रियां और पवित्रशास्त्रीय समानता

पवित्रशास्त्रीय समानता के लिए मसीही समर्थन

बाइबल सृष्टि में एवं उद्धार में पुरूषों और स्त्रियों में संपूर्ण समानता की शिक्षा देती हैं (उत्पत्ति 1:26–28; 2:23; 2:1–2; 1कुरि. 11:11–12; गल. 3:13,28; 5:1).

बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर ने स्वयं को पवित्रशास्त्र में प्रकट किया है, जो कि परमेश्वर का आधिकारिक वचन है (मत्ती 5:18; यूहन्ना 10:35; 2तीमु. 3:16; 2पत.1:20–21). हम विश्वास करते हैं कि पवित्रशास्त्र का विषयगत एवं चहुंमुखी अर्थ निकाला जाना चाहिए. हम ईश्वरीय प्रेरणा और व्याख्या के अंतर को भी पहचानते हैंः ईश्वरीय प्रेरणा का संबंध ईश्वरीय उत्तेजना एवं नियंत्रण से है, जिसके द्वारा संपूर्ण स्वीकृत पवित्रशास्त्र परमेश्वर का वचन है; व्याख्या का संबंध मानवीय कार्य से है जिसके द्वारा प्रकाशित सत्य को पवित्रशास्त्र की संपूर्णता के अनुरूप एवं पवित्रात्मा की अगुवाई में हम विचारने की कोशिश करते है. सच्चाई से पवित्रशास्त्रीय होने के लिए, मसीहियों को निरंतर अपने विश्वास को परखना चाहिए एवं पवित्रशास्त्र के प्रकाश में व्यवहार करना चाहिए.

पवित्रशास्त्रीय सत्य

सृष्टि

1. बाइबल यह सिखाती है कि पुरूष और स्त्री दोनों की सृष्टि परमेश्वर के स्वरूप में की गई थी, उनका परमेश्वर से सीधा संबंध था, और दोनों ने संयुक्त रूप में बच्चों के जन्म व पालन–पोषण की एवं सृष्टि पर अधिकार करने की जिम्मेदारी में हिस्सा लिया (उत्पत्ति 1:26–28).

2. बाइबल यह सिखाती है कि स्त्री और पुरूष संपूर्ण एवं समान भागीदारी के लिए सृजे गये थे. उत्पत्ति 2:18 में स्त्री के लिए प्रयुक्त 'सहायक' (एजेर) शब्द पुराने नियम में कई जगह परमेश्वर को संकेत करता है (उदाहरण के लिए 1शमू 7:12; भजन. 121:1–2). अतः यह शब्द किसी भी तरह स्त्रियों की अधीनता या निम्नस्तरीयता को नहीं बताता है.

3. बाइबल यह सिखाती है कि मनुष्य से स्त्री को रूप देना, मानव–जाति की मूल एकता एवं समानता को प्रदर्शित करती है (उत्पत्ति 2:21–23). उत्पत्ति 2:18,20 में 'उपयुक्त' (केनेगडो) शब्द समानता एवं पर्याप्तता को दर्शाता है.

4. बाइबल यह सिखाती है कि पुरूष एवं स्त्री दोनों मानव के पतन में समान हिस्सेदार थेः आदम, हव्वा की तुलना में कम दोषी न था (उत्पत्ति 3:6; रोमियों 5:12–21; 1कुरि.. 15:21–22).

5. बाइबल यह सिखाती है कि आदम द्वारा हव्वा पर नियंत्रण मानव के पतन का परिणाम था, एवं इस प्रकार यह प्रारंभिक सृष्टि की व्यवस्था का भाग नहीं था. उत्पत्ति 3:16 मानव के पतन के परिणामों का पूर्वानुमान है न कि सृष्टि के समय की आज्ञा का निर्देशन.

उद्धार

6. बाइबल यह सिखाती है कि यीशु मसीह न सिर्फ पुरूषों को परंतु स्त्रियों को भी उद्धार देने के लिए आए. मसीह में विश्वास करने के द्वारा हम सभी परमेश्वर की संतान बन जाते हैं, मसीह में एक हो जाते हैं और बिना किसी जातीय, सामाजिक या लिंग भेदभाव के आधार पर हम उद्धार की आशीषों के उत्तराधिकारी बन जाते हैं (यूहन्ना 1:12–13; रोमि. 8:14–17; 2कुरि. 5:17; गल. 3:26–28).

समाज

7. बाइबल यह सिखाती है कि पेन्तिकुस्त के दिन स्त्रियों एवं पुरूषों पर पवित्रात्मा उतरा था. बिना किसी भेदभाव के, स्त्रियों एवं पुरूषों में पवित्रात्मा निवास करता है एवं किसी एक लिंग को महत्वपूर्ण स्थान न देते हुए वरदानों को बहुतायत से बांटता है (प्रेरितों के काम 2:1–21; 1कुरि. 12:7,11; 14:31).

8. बाइबल यह सिखाती है कि स्त्रियों एवं पुरूषों दोनों को उनके आत्मिक वरदानों को विकसित करने एवं उपयोग करने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह के भण्डारियों के समान बुलाया गया है (1पतरस 4:10–11). उसके अधिकार के अधीन, मसीह की संपूर्ण देह की सेवा हेतु दोनों स्त्रियों एवं पुरूषों को स्वर्गीय वरदान व सामर्थ दिए गए हैं (प्रेरित. 1:14; 18:26; 21:9; रोमि. 16:1–7, 12–13,15; फिली. 4:2–3; कुलु. 4:15; यह भी देखें मरकुस 15:40–41; 16:1–7; लूका 8:1–3; यहून्ना 20:17–18; पुराने नियम के उदाहरणों से भी तुलना करेंः न्यायियों 4:4–14; 5:7; 2इति. 34:22–28; नीति. 31:30–31; मीका 6:4).

9. बाइबल यह सिखाती है कि नये–नियम की व्यवस्था में, स्त्री एवं पुरूष दोनों ही भविष्यवाणी की सेवा एवं राज–पुरोहित के कार्य को संपन्न करते हैं (प्रेरित. 2:17–18; 21:9; 1कुरि. 11:5; 1पत. 2:9–10; प्रका. 1:6; 5:10). इस कारण से, कुछ विशेष पदों की व्याख्या पवित्रशास्त्र के अन्य वचनों के साथ विरोधात्मक हो उस ढंग से नहीं करना चाहिए, जिससे उद्धार की योजना के अंतर्गत स्त्री को प्राप्त स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगे. किंतु व्याख्या करते समय पवित्रशास्त्र की विस्तृत शिक्षा एवं उनके संपूर्ण संदर्भ को ध्यान में रखा जाना चाहिए (1 कुरि. 11:2–16; 14:33–36; 1तीमु. 2:9–15).

10. बाइबल में नेतृत्व के कार्य की परिभाषा दूसरों को सेवा कार्य के लिए तैयार करने बाबत् बताया गया है न कि उन पर अधिकार के नियंत्रण के रूप में (मत्ती 20:25–28; 23:8; मरकुस 10:42–45; यहून्ना 13:13–17; गल. 5:13; 1पतरस 5:2–3).

परिवार

11. बाइबल यह सिखाती है कि पति एवं पत्नि दोनों ही जीवन के अनुग्रह के सहभागी हैं एवं यह भी कि दोनों आपसी अधीनता एवं जिम्मेदारी के संबंध में बंधे हैं (1कुरि. 7:3–5; इफि. 5:21; 1पतरस 3:1–7; उत्पत्ति 21:12). पति पत्नि का 'सिर' (केफाले) है, इस बात को ऐसा समझना चाहिए कि परस्पर आधीनता के इस रिश्ते में वह अपने आपको प्रेम और सेवा के लिये न्यौछावर कर देता है (इफि. 5:21–33; कुलु. 3:19; 1पतरस 3:7).

12. बाइबल सिखाती है कि माताओं एवं पिताओं दोनों को उनके बच्चों के पोषण, प्रशिक्षण, अनुशासन एवं शिक्षा में नेतृत्व का वहन करना चाहिए (निर्गमन 20:12; लैव्य. 19:3; व्यवस्था. 6:6–9; 21:18–21; 27:16; नीति. 1:8; 6:20; इफि. 6:1–4; कुलु. 3:20; 2 तीमु. 1:5; लूका 2:51 भी देखें).

लागुकरण

समाज

1. कलीसिया में, स्त्री एवं पुरूषों के वरदानों को पहचाना जाना चाहिए, विकसित किया जाना चाहिए और भागीदारी के हर स्तर में, सेवा और शिक्षा की सेवाकाईयों में उपयोग किया जाना चाहिए; जैसे छोटे झुण्ड़ के अगुवे के रूप में, परामर्शदाताओं के रूप में, सहायकों के रूप में, प्रबंधककर्ता के रूप में, मार्गदर्शकों के रूप में, प्रभु भोज बांटनेवालों के रूप में, और बोर्ड सदस्यों के रूप में, एवं पास्टरीय सहायता, शिक्षण, प्रचार एवं आराधना में.

ऐसा करने के द्वारा आत्मिक वरदानों के स्त्रोत के रूप में, कलीसिया परमेश्वर का, आदर करेगी. इतना ही नहीं कलीसिया के आधे सदस्यों को जिम्मेदारियों से वंचित नहीं रखने से स्वर्ग राज्य को होने वाले खतरनाक नुक्सान से कलीसिया को बचा सकेंगे और परमेश्वर के विश्वासयोग्य सेवक होने की आज्ञा को पूरा कर पायेगी.

2. कलीसिया में, सेवा एवं नेतृत्व में लौलीन स्त्री–पुरूषों को समूह की मान्यता मिलनी चाहिए. ऐसा करने से कलीसिया एकता एवं अनुरूपता के उदाहरण को प्रकट करेगी जो कि विश्वासियों के समाज होने का चिन्ह है. ऐसे संसार में जो भेद–भाव एवं बिखराव से टूटा हुआ है, कलीसिया स्वयं को उन सांसारिक तौर–तरीकों से अलग कर देगी जो कि महिलाओं को निम्न स्तरीय होने का अहसास कराती है. ऐसा करने के द्वारा कलीसिया से उनके निकल जाने को या उनके मसीही विश्वास को छोड़ देने से भी रोका जा सकेगा.

परिवार

3. मसीही घर में, पति–पत्नि को चाहिए कि वे अपनी खुद की इच्छा को टालकर एक दूसरे की प्राथमिकता दें और, इच्छाओं एवं आकांक्षाओं का ख्याल रखें. पति–पत्नि में से किसी को भी दूसरे पर नियंत्रण करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, किंतु प्रत्येक को दूसरे का सेवक होने का प्रयत्न करना चाहिए. प्रत्येक को विनम्रता में, दूसरे को स्वयं से अच्छा मानना चाहिए. किसी भी निर्णय लेने में रूकावट होने के समय उनको चाहिए कि वे बाइबल का सहारा ले; न कि एक–दूसरे पर निर्णय थोपे जाएं. ऐसा करने के द्वारा, पति–पत्नि, मसीही घर को अधिकार एवं नियंत्रण के गलत उपयोग के विरूद्ध खड़ा करने में सहायता करेंगे एवं पत्नि एवं बच्चों के दुरूपयोग से घर को बचाये रख सकेंगे जो कि इस गलत व्याख्या से उत्पन्न होता है कि पति को घर में सबसे ज्यादा अधिकार प्राप्त है एवं दूसरों को उससे कम.

4. मसीही घर में, पति–पत्नि को वरदानों, निपुणता एवं सुलभता के आधार पर नेतृत्व की जिम्मेदारियों की भागीदारी करनी चाहिए. किंतु ऐसा करने के दौरान एक–दूसरे का भी ख्याल रखा जाना चाहिए. ऐसा करने के द्वारा पति–पत्नि, एक दूसरे की क्षमताओं को जानेंगे और एक दूसरे को पूरक जानकर आपस में आदर सम्मान करना सीखेंगे. इस प्रकार पति–पत्नि में से किसी एक का हमेशा हारते रहने को रोक सकेगा, जिसमें आत्म–सम्मान को बचाये रखने के लिए गलत तरीकों का इस्तेमाल करना पड़ता है. शादी को भागीदारी के आधार पर स्थापित करने के द्वारा, पति–पत्नि अपने आप को मृत या विभाजित शादियों से बचा सकते हैं जो कि पारिवारिक असमानताओं के द्वारा उत्पन्न होते हैं.

5. मसीह में प्राप्त स्वतंत्रता के अनुरूप जीवन शैली अपनाने वाले परिवारों में पति–पत्नि दोषभावना व कपट रहित जीवन व्यतीत कर सकते हैं. वे गैर–पवित्रशास्त्रीय 'परंपरा' से स्वतंत्र किये गए हैं अतः वे मसीह में एक दूसरे की जवाबदारी में खुशी मना सकते हैं. ऐसा करने के द्वारा वे वचन के प्रति उनकी आज्ञाकारिता को प्रकट करते हैं, स्वतंत्रता की तलाश में रहनेवाले अन्य दम्पतियों के लिए आदर्श बनेंगे; एवं कलीसिया व परिवार पर थोपे जाने वाले असमानता व परमाधिकार का सामना कर सकेंगे.

हम विश्वास करते हैं कि इस दस्तावेज में दी गई पवित्रशास्त्रीय समानता पवित्रशास्त्र के अनुसार सही हैं.

हम इस विश्वास के कटिबद्ध हैं कि बाइबल, अपनी संपूर्णता में, स्वतंत्र करने वाला वचन है जो कि स्त्रियों एवं पुरूषों के सर्वाधिक उपयुक्त मार्ग प्रदान करता है ताकि वे पवित्र शास्त्र के द्वारा दिये गए वरदानों का उपयोग कर सकें एवं परमेश्वर की सेवा में उपयोगी हो सकें.

लेखकगणः
गिलबर्ट बिलेज़िकीआन, डब्ल्यु. वार्ड गैस्क्यु, स्टेन्ली एन. गनड्री, ग्रेचेन गैबेलिअन हल, कैथरिन क्लार्क क्रोइजर, जो एन लियॉन, रोजर निकॉल

सम्पर्क के लिए पता :
(c) 1989, क्रिश्चियन्स फोर बिबलीकल इक्युआलिटी

क्रिश्चियन्स फोर बिबलीकल इक्युआलिटी
122 वेस्ट फैन्कलिन एवेन्यु, स्यूट 218
मिनीआपोलीस, मिनीसोटा, अमेरिका 55404–2451
E-mail : cbe@cbeinternational.org
www.cbeinternational.org
फोनः (612) 872–6898
फैक्सः (612) 872–6891